वैश्विक विकास में सूचना प्रौद्योगिकी की भूमिका

✍ **डॉ. चैत्रा एस.**
सहायक प्राध्यापिका एवं
विभागाध्यक्षा, हिंदी विभाग,
जेएसएस महिला कॉलेज,
मैसूरु

पुरोवाक्

किसी गाँव, प्रदेश, राज्य एवं राष्ट्र की सीमाओं को लाँघकर वैश्विक स्तर पर सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं वैज्ञानिक क्षेत्र में आदान-प्रदान की प्रक्रिया को वैश्वीकरण कहते हैं। यह प्रक्रिया जनजीवन की उपलब्धियों का उद्‌घाटन कर विकास करते हुए आगे बढ़ती है। जिसमें मनुष्य के समस्त जीवन को समाविष्ट करके मानवहीन के संरक्षण को प्रधानता दी है। वैश्वीकरण ने परम्परागत दुराग्रह को तिलांजलि देकर सामाजिक परिवेश की अपनी एक अलग पहचान बनाई है। वैश्वीकरण के आगे देशों की सीमाएँ छोटी पड़ने लगी हैं और उन्होंने ज्यादा खुलेपन एवं सुधार की नीति अपनाई है। जिसमें वसुधैव कुटुंबकम् को साकार किया है। इसमें सूचना प्रौद्योगिकी ने महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है।

सूचना प्रौद्योगिकी ने सामाजिक विकास में अतुलनीय योगदान दिया है। सूचना प्रौद्योगिकी की बात उतनी ही पुरानी है, जितनी मानव का निर्माण। प्राचीन ग्रंथों में हम पा सकते हैं कि देवर्षी नारद संचारक के रूप में बहुत प्रसिद्ध थे। साहित्य के संदर्भ में चर्चा करने पर तथ्य सामने आते हैं कि अनेक साहित्यकारों ने अपने विचार संचार के माध्यम से व्यक्त करने के लिए हंस, बादल, पवन, तोता आदि का प्रयोग क या है। जायसी कृत 'पद्मावत' में नागमती प्रकृति के माध्यम से अपना विरह रत्नसेन तक पहुँचाने का प्रयास करती है। वर्तमान युग गतिमान बन गया है। परिणामस्वरूप अनेक अच्छी-बुरी घटनाएँ घटित हो रही हैं, तब मनुष्य अपनी अभिव्यक्ति दिए बिना नहीं रहता है। ओसामा-बीन-लादेन ने अमेरिका के वर्ल्ड-ट्रेड-सेंटर पर हमला किया। जिससे अमेरिका की अपरिणत हानि हो गई। इसे विश्व के अनेक विद्वानों ने मीडिया के जरिए सही-गलत की बहस की और विश्व को शांति की आवश्यकता महसूस करायी है। संकेत इस दिशा की ओर जाता है कि सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से विश्व सुरक्षा की चिंता व्यक्त हो रही है। संचार-प्रक्रिया विश्व के विचार, ज्ञान, संवेदना को अभिव्यक्त कर रहा है। इस संदर्भ में ए.वी. शनमुगम का कहना है कि—"ज्ञान, अनुभव, संवेदना, विचार और यहाँ तक कि अस्तित्व में होने वाले अभिनव परिवर्तनों की साझेदारी ही संचार

है और साझेदारी की यह प्रक्रिया ही संचार-प्रक्रिया कहलाती है।"[1] इस प्रकार सूचना प्रौद्योगिकी सामाजिक दायित्व के प्रति अहम् भूमिका निभा रहा है।

संचार पर अनेक विद्वानों ने अपने मत प्रकट किए हैं। मानव जब भाषा संचार का प्रयोग करता है, तब शाब्दिक और गैर-शाब्दिक मार्ग को अपनाता है। वैसे देखा जाए तो आज भाषा-संचार अनेक स्तरों पर होता है। आज नवजीवन विज्ञान और तंत्रज्ञान से विश्व नजदीक आ गया है। सूचना प्रौद्योगिकी में अद्‌भुत क्रांति हो गई है। आज अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर व्यापार करते समय हम भारत के एक ही शहर में बैठकर पूरे विश्व के व्यापार विषयक जानकारी पा सकते हैं। इस संचार क्रांति से मनुष्य का जीवन गतिमान बन गया है। इस संदर्भ में रूप चंद गौतम का मत उल्लेखनीय है "सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में क्रांति आई है। संपूर्ण दुनिया एक गाँव में तब्दील हो गई है। मुल्क के नक्शे बदले हैं। मनुष्य के बोलने का अंदाज बदला है और क्रिया कलाप भी।"[2] इससे कहने का तात्पर्य यह है कि सूचना प्रौद्योगिकी से दुनिया नजदीक आकर और गतिमान बनकर मानव का विकास हो रहा है।

जिस प्रकार जनसंचार राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक लेन-देन में सहायक होता है, उसी प्रकार वह सांस्कृतिक लेन-देन के स्रोत्र में कार्य कर र हा है। पाश्चात्य देशों में उभरी नई-नई विचारधारा सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से ही अन्य देशों ने ग्रहण की है। आज भारत की विचारधारा, संस्कृति, आदर्श जीवन-मूल्यों को अन्य राष्ट्र सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से अपना रहे हैं। मैं यहाँ योगगुरु रामदेव बाबा का उदाहरण देना सार्थक समझता हूँ, क्योंकि इनके योग-कार्यक्रम को दुनिया में लगातार माँग बढ़ रही है। वर्तमान अधिकतर मनुष्य चिंताग्रस्त, रोगग्रस्त और शरीर से कमजोर हो गया है। परिणामस्वरूप मनुष्य का जीवन दुखमय बन गया है। इसलिए स्वस्थ समाज और स्वस्थ शरीर के लिए रामदेव बाबा के योगा की प्रासंगिकता है। उनके योग कार्यक्रम को मीडिया वाले सुबह-सुबह दिखाकर जनता को आरोग्य विषयक अनमोल कार्यक्रम दिखा रहे हैं। मेरा संकेत इस दिशा की ओर जाता है कि आज सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से सांस्कृतिक लेन-देन की प्रक्रिया हो रही है, जो स्वस्थ समाज की ओर ले जाती है। आज सूचना प्रौद्योगिकी राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक मानव जीवन के व्यवहार को स्पष्ट करता है। इस संदर्भ में एन.सी. पंत का मत अवलोकनीय है—"जन-संपर्क का आधार मानव का सामूहिक व्यवहार है जो उसके सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक जीवन में प्रकट होता है।"[3] इससे स्पष्ट है कि सूचना प्रौद्योगिकी मानव जीवन के विकास में योगदान दे रहा है।

सूचना प्रौद्योगिकी विशाल जनसमूह तक कोई भी संदेश तत्काल पहुँचा देता है। बेशक, सूचना प्रौद्योगिकी वर्तमान काल का आश्चर्यजनक वैज्ञानिक क्रांतिकारी यशस्वी प्रयोग है, लेकिन आज यह भी चर्चा का विषय है कि सूचना प्रौद्योगिकी से व्यावहारिक दृष्टि से लोग नजदीक आ रहे हैं, पर भावनात्मक दृष्टि से दरारें पैदा हो रही है। आज हर राष्ट्र आर्थिक दृष्टि से और विज्ञान—तंत्र ज्ञान से प्रतियोगिता कर रहा है। परिणामस्वरूप विश्व में अशांति ने अपना रंग दिखा दिया है। जनजाहिर है कि अमेरिका विश्व का सरपंच बनने के लिए हर समय प्रयास कर रहा है। एशियाई राष्टोरों को और खासकर भारत को कमजोर बनाने के लिए पाकिस्तान तालिबान को सहायता करता आया है। वह आतंकवादियों को पनाह देता आया है। लेकिन आज ऐसी स्थिति निर्माण हो गई है कि उल्टा चोर कोतवाल को डाटें। अमेरिका की घिनौनी राजनीति उन पर ही उलट गयी है। अमेरिका सहयोगी और तालिबान सहयोगी राष्ट्रों में युद्धजन स्थिति निर्माण होकर तीसरा महासमर हो गया तो मानव सृष्टि का विनाश निश्चित है। हमें इससे रूबरू कराने का प्रयास सूचना प्रौद्योगिकी कर रही है। आज सूचना प्रौद्योगिकी पर सवाल उठाया जा रहा है कि आतंकवादियों की सुर्खियाँ बनाने से आतंकवाद बढ़ रहा है। कई विद्वानों का कहना है कि उसे नजरअंदाज करना चाहिए। इस संदर्भ में जोगेन्द्र सिंह का मत है कि आतंकवादियों के अनुभवों व्यक्तिगत जीवन की विशेषताओं, सूचनाओं आदि की जब प्रेस रिपोर्ट करता है तो इससे आतंकवाद विस्तार में मदद मिलती है। आतंकवाद की जनता नोटिस न ले तो वह अर्थहीन हो जाए।"[4] इससे स्पष्ट है कि अनेक विद्वान उसे अर्थहीन मानते हैं, लेकिन मेरा कहना है कि सूचना प्रौद्योगिकी का वास्तविक दायित्व है कि उसे यथार्थ के रूप में प्रस्तुत करें। सूचना प्रौद्योगिकी को आतंकवाद की नींव तक जाना जरूरी है। उसका निर्माण क्यों होता है? उसके दुष्परिणाम क्या हैं? उसके उपाय क्या है? यह बातें समाज को अवगत कराने का काम सूचना प्रौद्योगिकी का है। वे अपने दायित्व से मुखरकर प्रसिद्ध और स्वार्थ हेतु उसे अधिक महत्त्व देकर काम करेंगे तो समाज में गलत संदेश जा सकता है जिससे समाज दिशाहीन होकर विनाश की कगार की ओर जा सकता है।

सूचना प्रौद्योगिकी के अंतर्गत अनेक चैनल मनोरंजन का कार्यक्रम प्रस्तुत कर रहे हैं। वर्तमान मानव चिंताग्रस्त, गतिमान और तनावपूर्ण जीवन जी रहा है। उनका जीवन निष्क्रिय बनता जा रहा है। उनका जीवन सुखमय करने के लिए जनसंचार माध्यम मनोरंजन कार्यक्रम प्रस्तुत कर रहे हैं। इसमें कॉमेडी एक्सप्रेस, लाफ्टर चैनल, फू बाई फू, हँसी की बात आदि कार्यक्रमों के माध्यम से जनता के दुखमय जीवन में हँसी के फव्वारे उड़ाने का काम टी.वी. चैनल वाले कर रहे हैं। इस संदर्भ में डॉ. गोविंद गुंठे का मत सराहनीय है—"मनोरंजन मानव जीवन को निष्क्रिय नहीं बनाता

बल्कि जिंदगी को सुखद बनाता है।”[5] इस कारण आज मनोरंजन के लिए सूचना प्रौद्योगिकी की आवश्यकता महसूस हो रही है। इन कार्यक्रमों के माध्यम से मनुष्य का भावात्मक और गुणात्मक विकास हो रहा है।

भारत में प्रजातंत्र का शासन है। उसमें सूचना प्रौद्योगिकी की भूमिका महत्त्वपूर्ण है। देश का विकास उद्देश्यपूर्ण और निष्पक्ष बातों पर निर्भर होता है। उसमें सूचना प्रौद्योगिकी विचारात्मक, विकासात्मक और आशावादी अपेक्षापरक बातों को उठाता है। सूचना प्रौद्योगिकी से जुड़ा आदमी सामाजिक स्वास्थ्य बिगाड़ने वाली प्रक्षोभक बातों को नकरात्मक ईमानदारीपूर्वक अपना राष्ट्रीय कर्तव्य निभाते हुए समाज को सही राह दिखाने का प्रयास करता है। वह अपना कार्य करते समय विदेशी राष्ट्रों से मित्रता के दृढ़ संबंध निर्माण करते हुए अपने राष्ट्र की सुरक्षा का ध्यान रखता है। साथ ही सांप्रदायिक विद्वेष को बढ़ावा न देकर नैतिकता के साथ स्वस्थ मानव-सेवा करता है। वह अपनी चुनौतियों को उत्साह के साथ स्वीकारता है। यहाँ मुंबई के प्रसिद्ध पत्रकार जे.डी. का उदाहरण देना चाहूँगी। वह अपने राष्ट्र, कर्त्तव्य और काम के प्रति निष्ठावान और ईमानदार थे, इसलिए आतंकवादी, अंडरवर्ल्ड डॉन, पुलिस और भ्रष्ट राजनीतिक लोग उनसे चार हाथ दूर ही रहते थे। कहने का तात्पर्य है कि यह काम एक सेवा मानकर करना पड़ता है। पूर्वाग्रह मन में न रखते हुए निष्पक्षता से काम करना चाहिए। इसका प्रमुख उद्देश्य देश सेवा और समाज परिवर्तन होता है।

वर्तमान काल में वैश्वीकरण से विश्व एक-दूसरे के नजदीक आ गया है। आज जागतिक शांति, सांस्कृतिक लेन-देन और विकास में सूचना प्रौद्योगिकी का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। आज सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से संसार को एक सूत्र में बाँधा गया है। आज हर राष्ट्र सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं वैज्ञानिक परिवेश से जुट गया है। इस संदर्भ में गुलाब राठौड़ का कहना है—“आजकल ‘वसुधैव कुटुम्बकम्’ या ‘विश्वबंधुत्व’ की भावना को बढ़ावा मिल रहा है। इस कल्पना को साकार करने के लिए आवश्यक है कि एक राष्ट्र दूसरे को उसके वास्तविक रूप में जाने-समझे और यह तभी संभव है जब सभी राष्ट्र एक दूसरे की भाषा में अभिव्यक्त सभ्यता, संस्कृति, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, वैज्ञानिक परिवेश से परिचित हों।”[6] इस प्रकार विश्वबन्धुत्व की भावना निर्माण होने के लिए सूचना प्रौद्योगिकी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। विश्व अलग-अलग भूखंडों में विभाजित है। उनकी अलग-अलग भाषा, संस्कृति, रहन-सहन, आचार-विचार, खान-पान आदि को जोड़कर भावनात्मक एकता बनाए रखने का कार्य सूचना प्रौद्योगिकी कर रहा है। इससे मनुष्य-मनुष्य के बीच की दूरियाँ कम होकर सद्भाव निर्माण होने में मदद हो रही है। आज मानव परमाणु हथियार, आतंकवाद, विद्वेष, घृणा, ईर्ष्या आदि समस्याओं में

उलझा हुआ है। उसमें सद्भावना लाने और समस्याओं का समाधान ढूँढ़ने में सूचना प्रौद्योगिकी महत्त्वपूर्ण योगदान दे रहा है।

कहना गलत न होगा कि सूचना प्रौद्योगिकी का प्रधान उद्देश्य जनसेवा है। वह भारतीय लोकतंत्र का महत्त्वपूर्ण स्तंभ है। कुछ लोगों का कहना है कि सूचना प्रौद्योगिकी के कुछ दुष्परिणाम है। मेरा कहना है कि उसे सकारात्मक दृष्टि से देखें तो उसकी आज प्रासंगिकता है। सूचना प्रौद्योगिकी सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक और सांस्कृतिक आदि क्षेत्रों का यथार्थ अंकन करते हुए समस्याओं का समाधान ढूँढ़ते हुए स्वस्थ समाज की अपेक्षा करता है। उनका काम जोखिम भरा होने के बावजूद भी राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय कर्त्तव्य निभाने का कार्य सूचना प्रौद्योगिकी कर रहे हैं। सूचना प्रौद्योगिकी मानव विकास के लिए ईमानदारपूर्वक कार्य करते हुए बौद्धिक क्रांति, समतावादी, मानवतावादी उदात्त जीवन-मूल्यों के दृढ़ता के लिए प्रयास कर रहा है। इस प्रकार वैश्विक विकास में सूचना प्रौद्योगिकी का बहुआयामी सरोकार नज़र आता है।

संदर्भ सूची

1. डॉ. गोविन्द गुंठे – सूचना विज्ञान के बहुआयामी प्रभाव, पृ. 4
2. रूपचंद गौतम – संचार से जनसंचार, पृ. 170
3. एन.सी. पंत – पत्रकारिता एवं जन-संपर्क, पृ. 266
4. जोगेन्द्र सिंह – हिंदी पत्रकारिता की दिशाएँ, पृ. 88
5. डॉ. गोविन्द गुंठे – सूचना विज्ञान के बहुआयामी प्रभाव, पृ. 57
6. संपा. नीता गुप्ता – अनुवाद, जनवरी 2008, पृ. 44